ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक-23/06/2020 **बाट की पहचान**

卐 **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया** 卐

सुप्रभात बच्चों ,

आपका दिन मंगलमय हो!

प्यारे बच्चों !कल आपने अपनी पाठ्य पुस्तक कादंबरी के पाठ ४ की कविता '**बाट की पहचान,**' जिसके कवि डॉ हरिवंश राय बच्चन हैं के द्वितीय पद के भावार्थ को पढ़ा। कल की कक्षा को आज की कक्षा से जोड़ते हुए हम तृतीय पद के भावार्थ को पढ़ेंगे।
~~~~~~~~~~

इस कविता में, कवि ने हमें अपने जीवन मार्ग में आने वाली कठिनाइयों से अवगत कराया है ।बहुत इंसान ऐसे भी होते हैं ,जो कठिनाइयों का सामना करने से पूर्व ही कठिनाइयों को जानकर उस मार्ग से पीछे मुड़ जाते हैं और सफलता उनसे काफी दूर हो जाती है। अतः कभी भी जीवन -मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को देखकर जीवन-पथ से पीछे नहीं हटना चाहिए बल्कि उन कठिनाइयों को अपने साथ लेकर चलते हुए, आगे बढ़ते हुए अपने जीवन में सफलता को प्राप्त करना चाहिए। आइए अब चलते हैं अपने अध्ययन सामग्री पर।

<u>बाट की पहचान</u>

--डॉ.हरिवंश राय बच्चन

प्रसंग-

यथास्थिति और मनुष्य की महत्वाकांक्षा में क्या तालमेल होना चाहिए इन पंक्तियों में इस समस्या का समाधान कवि ने प्रस्तुत किया है।

व्याख्या-

हे राहगीर !तुमसे ऐसा किसी ने नहीं कहा है कि तुम अपने मन में स्वप्नों अर्थात मधुर कल्पनाओं को नहीं लाओ। सब लोगों की अपनी- अपनी मधुर कल्पनाएँ होती हैं। सभी लोगों ने अपनी- अपनी उम्र में और अपने- अपने समय में मधुर कल्पनाएँ देखा है। हे पथिक !तू लाख कोशिश कर ले परंतु तू इसमें सफल नहीं हो सकता कि तेरी कल्पनाएँ तेरे मन में न उठे । यह स्वप्न ,यह कल्पनाएँ व्यर्थ नहीं होते, इनका अपना लक्ष्य होता है, नेत्र रूपी आवास में। लेकिन सपनों से यथार्थ को झुठ- लाया नहीं जा सकता है ।कारण यह है कि स्वप्न या कल्पनाएँ जीवन में बहुत कम हैं यथार्थ- सच्चाई बहुत अधिक। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि तुम कल्पनाओं के ऊपर ही मत रीझते रहो। वरन सत्य क्या है- इसका भी निर्धारण कर ले ।हे पथिक! चलने से पहले अपने रास्ते की पहचान कर ले।

काव्यगत सौंदर्य-

- कवि कह रहे हैं कि महत्वाकांक्षा यथार्थ के सत्य और उपलब्ध साधनों पर ही आधारित होनी चाहिए और उन महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए कठिन श्रम के साथ-साथ कर्तव्य का पालन भी आवश्यक है।
- भाषा -सरल खड़ीबोली

कठिन शब्दार्थ

- प्रयत्न= कोशिश
- निलय= घर, घोंसला
- ध्येय=लक्ष्य
- मुग्ध=रीझना

छात्र कार्य

1. अपनी उत्तर पुस्तिका में कविता के भावार्थ को लिखें।
2. कठिन शब्दार्थ याद करें एवं उत्तर पुस्तिका में लिखें ।
3. पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ संख्या 28 में कविता के द्वितीय पद याद करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”